ख़ुत्बा-ए-जुमा

दिनांक: 18 मुहर्रमुल-हराम 1448 हिजरी / 3 जुलाई 2026 ईस्वी

التَّحْذِيرُ مِنْ خَطَرِ الْمُخَدِّرَاتِ وَالْمُسْكِرَاتِ

नशीली और मादक चीज़ों के ख़तरों से चेतावनी

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने इंसान को पैदा किया, उसे अक़्ल प्रदान किया और ईमान के ज़रिए उसे इज़्ज़त बख़्शी। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं; उसने हमें नेकी और भलाई का हुक्म दिया है, और हमें नाफ़रमानी, गुनाह और हर उस चीज़ से रोका है जो अक़्लों और जिस्मों को नुक़सान पहुँचाती है। और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं, जिन्हें हिदायत और हक़ और बातिल में फ़र्क करने वाली साफ़ निशानियाँ देकर भेजा गया। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार पर, उनके फ़ज़्ल व कमाल वाले सहाबा पर और क़ियामत तक सच्चे दिल के साथ उनके रास्ते पर चलने वालों पर दरूद, सलाम और बरकतें नाज़िल फ़रमाए।

अल्लाह की तारीफ़ और प्रशंसा के बाद: लोगो! अपने रब का तक़वा (डर) अख़्तियार करो जो हर छुपी हुई बात को जानता है। याद रखो, आख़िरत के लिए तक़वा ही सबसे बेहतरीन तैयारी है। उस दिन से बचो जब एक बड़ी आफ़त आएगी और डर के मारे दिल गले को आने लगेंगे, जिस दिन न तो माल कोई फ़ायदा देगा और न ही तुम्हारी जमा पूँजी। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

{وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى وَاتَّقُونِ يَاأُولِي الْأَلْبَابِ} [البقرة: 197]

"और (आख़िरत का) तोशा (सफ़र का ख़र्च) तैयार कर लो, और यक़ीनन बेहतरीन तोशा तक़वा है, और ऐ अक़्ल वालो! मुझ ही से डरो।" [सूरह अल-बक़रा: 197]

अल्लाह के बंदो! इंसानियत आज अनगिनत मुसीबतों, हलाकतों, फ़ितनों और आफ़तों का सामना कर रही है, इन आफ़तों ने इंसानी ताक़त को निचोड़ कर, उसकी नैतिक

बुनियादों और मूल्यों को तहस-नहस कर दिया है। इन्हीं सबसे घातक फ़ितनों में से एक बड़ा फ़ितना नशे का है, जिसके ख़ात्मे के लिए आज पूरी दुनिया और वक़्त की हुकूमतें एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रही हैं। इस एक बुराई ने कितने ही समाजों का अमन व सुकून तबाह कर दिया और हर तरफ़ अपराधों का बाज़ार गर्म कर रखा है।

नशीली चीज़ों और मादक पदार्थों के अनगिनत नुक़सानात हैं। यह तबाही व बर्बादी का कारण है, अल्लाह तआला की नाराज़गी की वजह है और जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाला एक अंधकारमय रास्ता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

{وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا} [النساء: 29]

"और अपने आप को क़त्ल न करो, यक़ीनन अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है।" [सूरह अन-निसा: 29]

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाए:

لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَا يَشْرَبُ الْخَمْرَ حِينَ يَشْرَبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ [أخرجه البخاري ومسلم]

"कोई ज़िना (व्यभिचार) करने वाला जिस वक़्त ज़िना करता है तो वह (पूर्ण) मोमिन नहीं होता, और कोई शराब पीने वाला जिस वक़्त शराब पीता है तो वह (पूर्ण) मोमिन नहीं होता।" [सही बुख़ारी व सही मुस्लिम]

नशा अक़्ल और दीन दोनों को बिगाड़ देता है, इंसान को बुरे और घिनौने कामों का आदी बना देता है, उसे एक नापसंदीदा और अपमानित इंसान की कतार में ला खड़ा करता है। इस नशे ने कितना माल तबाह किया? कितने हालातों को बिगाड़ दिया? कितनी ऊर्जा मिट्टी में मिला दी, और कितना वक़्त बर्बाद किया? ज़रा उन कार हादसों, बलात्कार और चोरी के अपराधों को तो देखिए जो इस नशे की वजह से पैदा होते हैं! इसने कितने ही बच्चों और बच्चियों को अनाथ बना दिया, कितनी दुश्मनियाँ भड़काईं और शरीफ़ व इज़्ज़तदार लोगों के लिए बदनामी का कारण बनी? इसने कितने ही सरों को झुका दिया और कितने ही इंसानों को ज़लील कर दिया? यही वजह है कि शरीअत ने इससे डराया है और हमारे सामने मौजूद कड़वे तथ्य भी इसकी पुष्टि करते हैं।

ऐ अख़्लाक़ वाली उम्मत! कोई अक़्लमंद इंसान इन जानलेवा ज़हरों और तबाहकुन बीमारियों को अपनाने की हिम्मत कैसे कर सकता है, जबकि इसके दीनी, सामाजिक, आर्थिक और चिकित्सीय नुक़सानात बेहिसाब हैं? इमाम हसन बसरी रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

لَوْ كَانَ الْعَقْلُ يُشْتَرَى لَتَغَالَى النَّاسُ فِي ثَمَنِهِ، فَالْعَجَبُ مِمَّنْ يَشْتَرِي بِمَالِهِ مَا يُفْسِدُهُ

"अगर अक़्ल बाज़ार में बिकती तो लोग महंगी क़ीमत देकर भी इसे ख़रीदते, लेकिन ताज्जुब है उस आदमी पर जो अपने माल से ऐसी चीज़ ख़रीदता है जो उसकी अक़्ल को ही बर्बाद कर दे।"

ऐ अल्लाह के बंदो! इंसान जब अपनी अक़्ल खो बैठता है तो वह फ़साद, सरकशी, तबाही और ज़ुल्म पर उतर आता है और दूसरों को नुक़सान पहुँचाता है; और यही तमाम बुराइयों की जड़ और ख़तरे की असली जगह है। ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

اجْتَنِبُوا الْخَمْرَ؛ فَإِنَّهَا أُمُّ الْخَبَائِثِ...

"शराब से बचो, क्योंकि यह तमाम बुराइयों की माँ है। तुमसे पहले के ज़माने में एक आदमी था जो बड़ा इबादतगुज़ार था। एक बदचलन औरत उस पर आशिक़ हो गई। उस औरत ने अपनी दासी को उसके पास भेजा और कहलवाया कि हम तुम्हें एक गवाही के लिए बुला रहे हैं। वह आदमी उस दासी के साथ चल पड़ा, यहाँ तक कि वह एक ख़ूबसूरत औरत के पास पहुँचा जिसके पास एक लड़का और शराब का मटका था। औरत ने कहा: अल्लाह की क़सम! मैंने तुम्हें गवाही के लिए नहीं बुलाया, बल्कि मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि तुम मुझसे बदकारी करो, या इस प्याले से शराब पियो, या इस लड़के को क़त्ल कर दो। उस आदमी ने (अपने ख़याल में शराब को सबसे हल्का गुनाह समझते हुए) कहा: मुझे इस शराब का एक प्याला पिला दो। औरत ने उसे एक प्याला पिलाया। उसने कहा: मुझे और दो। चुनांचे वह शराब पीता रहा यहाँ तक कि नशे में धुत्त होकर उसने औरत के साथ बदकारी भी कर ली और उस मासूम जान को क़त्ल भी कर दिया। अतः शराब से बचो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! ईमान और शराब की

लत कभी एक साथ जमा नहीं हो सकते, मगर यह कि जल्द ही इनमें से एक दूसरे को निकाल बाहर करता है।" [इस हदीस को इमाम नसाई ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है]।

मुसलमान भाइयो! शराब से भी बदतर वह नशीले पदार्थ हैं; जिनमें अलग-अलग क़िस्म के ड्रग्स, सुस्ती पैदा करने वाले पाउडर और नशीले इंजेक्शन शामिल हैं। ये इंसान की पाँच बुनियादी ज़रूरतों को जड़ से ख़त्म कर देती हैं, यानी: अक़्ल, माल, इज़्ज़त, दीन और जान। शैख़ुल इस्लाम इब्न तैमिया रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

إِنَّ الْحَشِيشَةَ حَرَامٌ، يُحَدُّ مُتَنَاوِلُهَا كَمَا يُحَدُّ شَارِبُ الْخَمْرِ، وَهِيَ أَخْبَثُ مِنَ الْخَمْرِ؛ مِنْ جِهَةِ أَنَّهَا تُفْسِدُ الْعَقْلَ وَالْمِزَاجَ، حَتَّى يَصِيرَ فِي الرَّجُلِ تَخَنُّثٌ وَدِيَاثَةٌ، وَغَيْرُ ذَلِكَ مِنَ الْفَسَادِ، وَأَنَّهَا تَصُدُّ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ

"बेशक चरस हराम है, और इसका इस्तेमाल करने वाले पर उसी तरह 'हद' (शारीरिक दंड) लगाई जाएगी जिस तरह शराब पीने वाले पर लगाई जाती है। बल्कि यह शराब से भी ज़्यादा गंदी है, इस लिहाज़ से कि यह अक़्ल और मिज़ाज को बिगाड़ देती है, यहाँ तक कि इंसान में महिलाओं जैसा आचरण और बेग़ैरती पैदा हो जाती है, इसके अलावा यह अल्लाह के ज़िक्र से भी रोकती है।"

और यह बात बिल्कुल हक़ और दुरुस्त है, क्योंकि शराब की हुरमत में तमाम क़िस्म के नशीले पदार्थ और मादक चीज़ें शामिल हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी कतीम ﷺ ने फ़रमाया:

كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ، وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ [أخرجه مسلم]

"हर नशा लाने वाली चीज़ शराब है, और हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है।" [सही मुस्लिम]

प्रिय भाइयो! जब हम इस आफ़त के कारणों को तलाश करते हैं, तो हमें मालूम होता है कि इसकी बुनियादी वजह ईमान की कमज़ोरी और शैतान का क़ब्ज़ा है, इसी के साथ जानलेवा तन्हाई, ख़ाली वक़्त, ज़रूरत से ज़्यादा माल, बुरी संगत, अंधी नक़ल और नफ़्सानी ख़्वाहिशों की पैरवी भी इसमें शामिल हैं। शायर कहता है:

إِنَّ الشَّبَابَ وَالْفَرَاغَ وَالْجِدَةْ مَفْسَدَةٌ لِلْمَرْءِ أَيُّ مَفْسَدَةْ

"जवानी, ख़ाली वक़्त और दौलत की ज़्यादती, इंसान को इस क़दर बिगाड़ देती हैं कि जिसकी कोई इंतिहा नहीं!"

इन कारणों में से एक कारण माता-पिता का अपने बच्चों से लापरवाह होना भी है, जिसकी वजह से वे आवारागर्दी करते हैं, नासमझ और बेवक़ूफ़ लोगों की संगत में पलते हैं, और इस तरह वे अपने लिए और अपने घर वालों के लिए दुर्भाग्य का सामान बनते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ، وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ [أخرجه البخاري ومسلم]

"और मर्द अपने घर वालों का निगरान है, और उससे उसकी देख-रेख में रहने वाले लोगों के बारे में सवाल किया जाएगा।" [सही बुख़ारी, सही मुस्लिम]

ख़बरदार! अगर आप नशों के इस दलदल में गिर चुके हैं तो अल्लाह से डरें, ज़मीन व आसमान के रब के सामने पेश होने वाले दिन को याद करें, और फ़ौरन इस गुनाह को छोड़कर सच्ची तौबा की तरफ़ बढ़ें; क्योंकि तौबा अभी मुमकिन है और उसका दरवाज़ा खुला है। उस वक़्त का इंतज़ार न करें जब आप हसरत और दर्द के दलदल में फँस जाएँ और फिर पछताएं, जबकि वह वक़्त पछतावे का नहीं होगा। "अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"।

और याद रखिए!—अल्लाह आपका मददगार हो—इन ज़हरों की वजह से जो भी हाथ ज़ुल्म के लिए उठता है, जो भी ज़िंदगी मौत के मुँह में जाती है, जो दौलत बर्बाद होती है और जो सेहत तबाह होती है, इस भयानक गुनाह का एक बड़ा हिस्सा इन नशीले पदार्थों को बढ़ावा देने और बेचने वालों के सर जाता है। ये असल में फ़ितना व फ़साद के वो हथियार हैं जिन्हें शैतान ने मुल्कों और इंसानों की तबाही के लिए इस्तेमाल किया है। ये सौदागर सख़्त गुनहगार और दुनिया और आख़िरत में सज़ा के हक़दार हैं। इन्हें

अल्लाह की पकड़ से डरना चाहिए और उस रब की चेतावनी को याद रखना चाहिए जिसकी दी हुई सज़ा का वादा कभी झूठा नहीं होता।

{إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ} [النور: 19]

"बेशक जो लोग यह पसंद करते हैं कि ईमान वालों में बेहयाई फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।" [सूरह अन-नूर: 19]

यह सज़ा तो उस आदमी के लिए है जो सिर्फ़ दिल से बुराई फैलना पसंद करता है, तो फिर उसका हाल क्या होगा जो ख़ुद इस बुराई को फैलाने का कारण बन रहा है?!

अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए क़ुरआन व सुन्नत में बरकत अता फ़रमाए, और हमें इनमें मौजूद हिदायत और हिक़्मत से फ़ायदा पहुँचाए। मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अपने लिए, आपके लिए और तमाम उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए अल्लाह से माफ़ी तलब करता हूँ। अतः आप सब भी उसी से माफ़ी मांगें, यक़ीनन वह बहुत माफ़ करने वाला, अति दयालु है।

दूसरा ख़ुत्बा

सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे, उसके रसूल और उसके चुने हुए पैग़ंबर हैं। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार पर, उनके सहाबा पर और उनसे मुहब्बत रखने वालों पर दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाए।

हम्द व सना के बाद: अल्लाह तआला से डरें जैसा कि उससे डरने का हक़ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا (الطلاق: 5)

"और जो आदमी अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके गुनाह दूर कर देगा और उसे बड़ा अजर अता फ़रमाएगा।" [सूरह अत्-तलाक़: 5]

अल्लाह के बंदो! आपको यह मालूम होना चाहिए कि नशे के आदी व्यक्तियों को इस दलदल से निकालने और मुक्ति दिलाने के बहुत से रास्ते हैं, और अल्लाह के फ़ज़्ल से इसके साधन भी अनेक हैं। इन साधनों में सबसे ज़्यादा उपयोगी और असरदार साधन: नशा करने वाले के अंदर दीनी जज़्बे और अन्तरात्मा की बेदारी (जागृति) को मज़बूत करना है।

यह वही ज़मीर की बेदारी है जिसका असर हमने उस वक़्त देखा जब शराब की हुरमत (प्रतिबंध) और उससे बचने के हुक्म पर आधारित आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई, तो मदीना मुनव्वरा की गलियों में शराब दरियाओं की तरह बहा दी गई। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ * إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ (المائدة: ٩٠ – ٩١)

"ऐ ईमान वालो! यह शराब और यह जुआ, यह आस्ताने (बलिपीठ) और पांसे सब गंदे शैतानी काम हैं, लिहाज़ा इनसे बचते रहो ताकि तुम सफलता पा सको। शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ आते हो?" [सूरह अल-माइदा: 90-91]

चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने एक घोषणा करने वाले को हुक्म दिया जिसने यह ऐलान किया:

أَلَا إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ

"ख़बरदार हो जाओ! बेशक शराब हराम कर दी गई है।" [सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, हदीस के राबी हज़रत अबू हुरैरा]

और मुसनद अहमद में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है—जिसे शुऐब अल-अरनाऊत ने 'हसन' क़रार दिया है—कि सहाबा ने क़ुरआन के इस फ़रमान:

فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ

"क्या तुम बाज़ आने वाले हो?" का पालन करते हुए फ़ौरन कहा:

انْتَهَيْنَا رَبَّنَا

"ऐ हमारे रब! हम बाज़ आ गए।"

नशे से मुक्ति का एक अहम ज़रिया यह भी है कि नशे के आदी शख़्स को उस दूषित और बदबूदार माहौल और बुरी सोहबत से दूर किया जाए, और उसे नेक व सदाचारी लोगों की सोहबत अपनाने की रहनुमाई की जाए, जो तौबा करने और दीन पर जमे रहने में उसके मददगार बन सकें। इसके साथ-साथ, नशे के आदी लोगों के इलाज के लिए दुरुस्त और वैज्ञानिक तरीक़े अपनाना और उनके वक़्त को उपयोगी व लाभदायक कामों में व्यस्त रखना भी ज़रूरी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (المائدة: 39)

"फिर जो अपने ज़ुल्म के बाद तौबा कर ले और अपना सुधार कर ले, तो यक़ीनन अल्लाह उसकी तौबा क़बूल फ़रमाएगा, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, निहायत रहम फ़रमाने वाला है।" [सूरह अल-माइदा: 39]

अल्लाह के बंदो! इस मौक़े पर गृह मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय की निष्ठावान और शानदार सेवाओं का एतराफ़ करना नहीं भूल सकते। चुनांचे गृह मंत्रालय इन घातक ज़हरों के रोकथाम, तस्करों और डीलर्स का पीछा करने और उन्हें अंजाम तक पहुँचाने के लिए पूरी ताक़त से जंग लड़ रही है। दूसरी तरफ़, स्वास्थ्य मंत्रालय नशे के आदी लोगों की देख-भाल और उनकी ऐसी चिकित्सकीय व मनोवैज्ञानिक बहाली (Rehabilitation) के लिए प्रयासरत है जो उन्हें समाज का एक उपयोगी और तंदुरुस्त हिस्सा बना सके।

लिहाज़ा जिस किसी को भी किसी नशे के शिकार आदमी की जानकारी हो, उसे चाहिए कि वह तुरंत संबंधित अधिकारियों को सूचित करे ताकि वक़्त रहते उसे इलाज के लिए विशेष हस्पतालों या बहाली के केंद्रों में दाख़िल कराया जा सके, और उसे इस मौत के भँवर में डूबने के लिए अकेला न छोड़ा जाए।

ऐ अल्लाह! हमें अपने हलाल के ज़रिए हराम से सुरक्षित रख, और अपने फ़ज़्ल से हमें अपने सिवा हर किसी से बे-नियाज़ कर दे। ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में ईमान की

मोहब्बत पैदा कर दे और इसे हमारे दिलों में ख़ूबसूरत बना दे, और हमारे दिलों में कुफ़्र, गुनाह और नाफ़रमानी की नफ़रत डाल दे और हमें हिदायत पाए हुए लोगों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को इज़्ज़त व ग़लबा अता फ़रमा, और शिर्क व मुशरिकों को ज़लील व रुस्वा कर दे। अपने दीन, अपनी किताब, अपने नबी ﷺ की सुन्नत को ग़ालिब कर दे और अपने मोमिन बंदों की मदद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों, और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ़ फ़रमा, चाहे वे ज़िंदा हों या वफ़ात पा चुके हों। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली-अहद (युवराज) को अपनी हिदायत के मुताबिक़ अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, और उनके तमाम आमाल को अपनी इताअत और प्रसन्नता का ज़रिया बना। और ऐ अल्लाह! इस मुल्क को अमन व इत्मीनान का गहवारा, दानवीर, ख़ुशहाल और अमन व ईमान का घर बना, और इसी तरह मुसलमानों के अन्य सारे मुल्कों की भी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी